SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

साहित्य जगत और डॉ. विनोद कुमार शुक्ल

कैलाश चंद्र, हिंदी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बलौदा, जांजगीर–चांपा, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
कैलाश चंद्र
E-mail : kailashchandp22@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/05/2026
Revised on : 30/07/2026
Accepted on : 08/08/2026
Overall Similarity : 00% on 31/07/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Jul 31, 2026 (07:11 AM)
Matches: 0 / 1714 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

छत्तीसगढ़ के महान सपूत स्व. डॉ. विनोद कुमार शुक्ल जी एक अच्छे कवि, निबंधकार, उपन्यासकार, समाज सुधाकर, समाजसेवी, ही नहीं अपितु एक अच्छे अनुवादक और बहुभाषी तत्व ज्ञानी व्यक्तित्व के धनी थे। शुक्ल जी की रचना में जो अपने अपनेपन और मिट्टी की सौंधी महक आती है वह अन्य लेखकों में उतना नहीं आता हैं तथा शुक्ल जी रचना में उस समय की जो परिवेश और समाज का अति सूक्ष्म चित्रण किया गया है जो उस समय में इतना प्रभावी नही था। शुक्ल जी आज साहित्य जगत में मरकर भी अमर हो गये और अपनी अविस्मरीय कृत्यो से साहित्य जगत मे मील के पत्थर बन गये। वे अपनी रचनाओ से इस संसार मे अमर हो गए।

मुख्य शब्द

डॉ. विनोद कुमार शुक्ल, साहित्य, नौकर की कमीज, हिंदी.

डॉ. विनोद कुमार शुक्ल के पूर्वज उत्तर प्रदेश जिला उन्नाव (बक्सर के समीप) के जगतपुर ग्राम में निवास करते थे। उनके पूर्वज किसी कारणवश उत्तर प्रदेश छोड़कर मध्य प्रदेश के दुर्ग के राजनांदगांव जिला में आकर बस गए। यहीं बहुप्रतिभा के धनी डॉ विनोद कुमार शुक्ल का जन्म 1 जनवरी 1937 को राजनांदगांव जिला दुर्ग मध्य प्रदेश में हुआ था जो की अब जिला राजनांदगांव राज्य छत्तीसगढ़ है। शुक्ल जी की मृत्यु उनके कर्म क्षेत्र रायपुर में एम्स में श्वसन रोग के कारण 23 दिसंबर 2025 को हुई।

डॉ विनोद कुमार शुक्ल खुद अपने जन्म के बारे में लिखते हैं: "मेरा जन्म 1 जनवरी 1937 को राजनांदगांव मध्य प्रदेश में हुआ मां बताती थी कि राजनांदगांव में जिस दिन कृष्ण टॉकीज का उद्घाटन हुआ उसे दिन मेरा जन्म हुआ है।"

डॉ विनोद कुमार शुक्ल के पारिवारिक पृष्ठभूमि को देखते हैं तो पिता का नाम स्वर्गवासी शिव गोपाल प्रसाद शुक्ल तथा माता का नाम श्रीमती रुक्मिणी देवी था। शुक्ल जी की पत्नी का नाम श्रीमती सुधा शुक्ल (सुधा शुक्ला जी की नागपुर में

पली बड़ी कन्या है) पुत्र – शाश्वत शुक्ल और पुत्री – विचारदर्शनी है।

डॉ विनोद कुमार शुक्ल

"मेरा बचपन राजनांदगांव में बीता। पिता की अकाली देहांत होने से मैं बचपन में ही प्रौढ़ बन गया। आदमी अपनी तरह से बड़ों की तरह सोचने के तरीके से गुजरा। बचपन में दुख अच्छे से समझ में आता है। दुख बहुत अच्छे से समझना नहीं आता था बचपन कुछ खास नहीं था।"

डॉ. विनोद शुक्ल जी पढ़ने में अच्छे थे और इसी कारण उनके हर कक्षा में अच्छे अंको से उत्तीर्ण होते रहे किंतु पिता की मृत्यु के बाद उनकी शिक्षा में गहरा प्रभाव पड़ा इन्होंने मैट्रिक शिक्षा अपने स्थानीय स्कूलों में प्राप्त किया था तत्पश्चात इंटरमीडिएट की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और सन 1957 में जबलपुर कृषि महाविद्यालय में प्रवेश लिया और वहां भी प्रावीण सूची में पास हुए। प्रवेश के तत्पश्चात् 1965 में कृषि में एमएससी (M. Sc.) किए। उसके कुछ समय पश्चात् ही मध्य प्रदेश कृषि विस्तार अधिकारी बने फिर जगदलपुर कृषि विश्वविद्यालय के अध्यापक हुए। 1964 में इनका तबादला रायपुर हो गया जहां इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में 1994 में सेवानिवृत हुए। सेवानिवृत होने के पश्चात् 94 से 96 तक निराला सृजन पीठ भोपाल में अतिथि साहित्यकार रहे।

डॉ. साहब इतने सरल आदमी थे कि वे खुद को कभी लेखक मानते ही नही थे। वे कहते थे किः "मैं तो नौकरी करता हुँ खाली वक्त मे लिख लेता हुँ।"

डॉ. विनोद कुमार शुक्ल जी ही नहीं हर लेखक अपनी जीवन का कुछ अंश अपनी रचनाओं में डाल ही देता है वैसे ही डॉक्टर साहब ने भी अपनी रचनाओं में अपने जीवन का कुछ अंश डाला है, जैसे कि अमृत लाल नागर की रचना में जैसे खंजन नयन और मानस के हंस इन रचनाओ में लेखक श्री नागर जी ने खंजन में वात्सल्य सम्राट सूरदास तथा मानस के हंस में गोस्वामी तुलसीदास की जीवन को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है। सच्चिदानंद हीरानंद वासनम अज्ञेय शेखर एक जीवनी के माध्यम से अपने ही जीवन का जो चित्रण किया है वह अद्‌भुत है साथ ही अपने संबंधों का भी चित्रण किया है। गुनाहों का देवता में धर्मवीर भारती ने चंदर के माध्यम से अपने ही मनोभावों का चित्रण किया है जिसमें चंदर नमक शोधार्थी द्वारा अपने प्रोफेसर या निर्देशक की पुत्री सुधा से प्रेम करता है, किंतु दोनों सुधा और चंदर एक दूसरे से प्रेम करते हैं इसका भी चित्रण गुनाहों के देवता में हुआ है।

इसी प्रकार से डॉ. विनोद कुमार शुक्ल जी ने भी एक नौकर की कमीज में एक सामान्य व्यक्तित्व के आदमी का चित्रण किया है जो शांत सरल और समझदार है। ऐसा नही हैं कि उसकी पत्नी भी बहुत समझदार स्वभाव से सरल और सुशील आदि गुणों से संपन्न है। संतु बाबू उर्फ़ संतराम आबकारी विभाग में छोटे से पोस्ट में कलर्क है जिसका वेतन भी कम है और उसी कम वेतन से वह अपने परिवार का पालन पोषण करते है। इसकी फटे हुए कमीज का वर्णन किया है जो एक नौकर पहने हुए हैं।

प्रेम की जगह अनिश्चित है (सब कुछ होना बाकी है)
वहाँ बहुत दोपहर में भी
थोड़ा–सा अंधेरा है
जैसे बदली छाई हो
बल्कि रात हो रही है
और रात हो गई हो

1. अकेले–अकेले होने एक–एक अकेले के बीच रखना अपने को हम लोग कहता हूं।
2. एक छत्तीसगढ़िया और बिहारी की तुलना करते हुए कहते हैं छत्तीसगढ़िया कहता हैः हमन आवत हन वही एक बिहारी कहता है हम लोग आता हूं।
3. तुम हम लोग हो; वह भी हम लोग हो।

कविवर शुक्ल जी नदी और काम की तरह सभी से मिलना चाहते हैं जिसमें कवि शुक्ल जी एक उफनती के सामान जो अपने किनारे पर वह टीलो चट्टान और पर्वत तालाबों से मिलने की बात करते हैं और उनसे मिलने जाने के लिए आतुर है।

जब तक चलेंगे जिंदगी की सांसे
कहीं प्यार कहीं टकराव मिलेगा।

रायपुर, बिलासपुर संभाग है, महाकौशल छत्तीसगढ़िया, भारतवर्ष इसी में राजनांदगांव मेरा घर हैं। दीवार में एक खिड़की रहती थी जिसका प्रकाशन 1997 में लिखा गया एक प्रसिद्ध उपन्यास है जिसे 1999 में साहित्य अकादमी पुरस्कार द्वारा प्रस्तुत किया गया था जिसमें पात्र रघुवर प्रसाद जो की एक निजी विश्वविद्यालय में गणित का प्रध्यापक है जो दोनों हाथों से लिखता है और उसकी पत्नी सोनसी जिसमें एक असाधारण सा उपन्यास है जिसमें रोजमर्रा की परेशानियों का तथा एक साधारण परिवार की कथा लिखी गई है दीवार में एक खिड़की रहती है। उपन्यास में जो महाविद्यालय है और गांव के आसपास की परिवेश का चित्रण गया है।

1999 में नौकर की कमीज उपन्यास बोझ कहानी पर फिल्म मणि कौन ने बनाया था। दीवार पर एक खिड़की उपन्यास का दिल्ली में कई बार नाट्य पर रूपांतरण किया गया।

रचना संसार

- वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह, वर्ष 1981।
- सब कुछ होना बचा रहेगा, वर्ष 1992।
- अतिरिक्त नहीं, वर्ष 2000।
- कविता से लंबी कविता, वर्ष 2001।
- आकाश धरती को खटखटाता है, वर्ष 2006।
- पचास कविताएँ, वर्ष 2011।
- कभी के बाद अभी, वर्ष 2012।
- कवि ने कहा, –चुनी हुई कविताएँ वर्ष 2012।
- प्रतिनिधि कविताएँ, वर्ष 2013. आदि।

कविता एवं कविता संग्रह

- नौकर की कमीज़, वर्ष 1979।
- खिलेगा तो देखेंगे, वर्ष 1996।
- दीवार में एक खिड़की रहती थी, वर्ष 1997।
- हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़, वर्ष 2011।
- एक चुप्पी जगह, वर्ष 2018।

ये कुछ डॉ विनोद कुमार शुक्ल की प्रसिद्ध उपन्यास हैः

- पेड़ पर कमरा, वर्ष 1988।
- महाविद्यालय, वर्ष 1996।
- एक कहानी, वर्ष 2021।
- घोड़ा और अन्य कहानियाँ, वर्ष 2021।
- 'गोदाम', वर्ष 2020।
- 'गमले में जंगल', वर्ष 2021।

आदि कहानी तथा कहानी संग्रह।

कृतियों के अनुवाद

- The Servant's Shirt, Year 1999 (Novel).
- A Window Lived in The Wall, Year 2005 (Novel).
- Once it Flowers, Year 2014 (Novel).
- Moonrise From The green Grass Roof, Year 2017 (Novel).
- Blue us Like Blue, Year 2019 (Stories Collection).
- The Windows in Our House are Little Doors, Year 2020 (Novel).

डॉ. विनोद कुमार शुक्ला की रचनाओं से इन पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त किए हैं:

- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा गजानन माधव मुक्तिबोध फैलोशिप 1975–76।
- मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् द्वारा वीर सिंह देव पुरस्कार नौकर की कमीज उपन्यास पर 1979– 78।
- उड़ीसा की वर्णमाला संस्था द्वारा सृजन भारतीय सम्मान 1992।
- सब कुछ होना बचा है के लिए भवानी प्रसाद मिश्र पुरस्कार 1992।
- रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार 1992।
- मध्य प्रदेश शासन का शिखर सम्मान 1944।
- मध्य प्रदेश शासन का मैथिलीशरण गुप्त सम्मान 1995।
- दयावती मोदी कई शिखर सम्मान 1997।
- दीवार में एक खिड़की रहती थी उपन्यास पर 1999 में साहित्य अकादमी।
- छत्तीसगढ़ राज्य का सुंदरलाल शर्मा सम्मान 2001।
- पी ए एन / नावो कोव को अवार्ड 2023।
- 59 वे ज्ञानपीठ पुरुस्कार 2024–25।

निष्कर्ष

एक पुण्यात्मा डॉ. विनोद कुमार शुक्ल के जीवन को पढ़कर अनंत अनुभूति का आभास होता है जिसमें किसी छत्तीसगढ़ के ही नहीं अपितु भारतवर्ष के सपूत के रूप में उनकी रचनाओं में जादूई भाव हैं। इनके किसी अनजान साथी से मिलने के लिए व्याकुल हुए और दीवार में खिड़की रहती है उपन्यास को पढ़कर एक साधारण परिवार में निजी महाविद्यालय में काम करने वाले रघुवर प्रसाद और उसकी पत्नी सोनसी के बारे मे जानकारी होती है। इनक साहित्यिक रचनाये जीवन के उतार–चढ़ाव से ओत–प्रोत है।

संदर्भ सूची

1. त्रिपाठी, अरविंद, सम्पा. (2006) *आकाश धरती को खटखटाता है: विनोद कुमार शुक्ल की चुनी हुई कविताएं.* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. शुक्ल. विनोद. (2025) *दीवार में एक खिड़की रहती थी.* आधार प्रकाशन, पंचकुला।
3. शुक्ल. विनोद. (2025) *कविता से लंबी कविता.* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. शुक्ल. विनोद. (2023) *सब कुछ होना बचा रहेगा.* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. शुक्ल. विनोद. (2006) *नौकर की कमीज.* राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. मुचाते, एस. एन. (2002) विनोदकुमार शुक्ल के उपन्यासों में युवा वर्ग ख्मास्टर ऑफ फिलॉसफी शोध–प्रबंध, शिवाजी विश्वविद्यालय,. शिव ज्ञानसागर शिवाजी विश्वविद्यालय. http://ir.unishivaji.ac.in:8080/jspui/bitstream/123456789/2549/3/03_Chapter%201.pdf, Accessed on 09/04/2026.

****